other factors which have to be taken into account. Power is one important factor, for instance. Therefore, a view has to be taken which to the extent possible, reconciles the two positions. But unfortunately, the two positions cannot be totally reconciled.

Kharif Production

*324. SHRI S.B. RAMESH BABU: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that there has been a delay in the arrival of monsoon which has caused a lot of anxiety among the farmers; and

(b) if so, what steps Government are taking to meet the likely shortfall in the kharif production due to inadequate rains?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION (SHRI YOGENDRA MAKWANA): (a) and (b) A Statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) and (b) The South West Monsoon advanced over Kerala on 4th June, 1986, as against the normal due date of 1st June. There was a relative lull in rainfall activity from 4th to 14th June, 1986. The position, however, improved thereafter except in the North-Eastern States, Bihar, Rajasthan, Kerala and Tamil Nadu from where deficient rainfall was reported. Due to good rains between 23rd and 28th July, 1986 in Rajasthan, the deficiency impact in the State is likely to be minimised. In the Southern States, during August, rainfall from atmospheric depressions, if any, could help in reducing moisture stress. Kharif sowing in some States are since going on, As such, it is too early to make any assessment at this stage of the impact of rainfall on kharif production during this year.

श्री एस० बी० रमेश बाबू : मान्यवर, देश में ऐसे कितने इलाके हैं जहा पर वर्षा ठीक न होने के कारण सूखा पड़ा हुआ है और कितने लाख हेक्टियर भूमि में अनाज को नुकसान हुआ है ?

श्री योगेन्द्र मकवाणा : श्रीमान्, जहां तक इस साल की बात है मैंने अपने जवाब में बता दिया है । जो आज की स्थिति है उसमें कुछ ऐसा कह नहीं सकते हैं कि खरीफ की फसल को नुकसान होगा या नहीं । जहा तक सूखे की बात है कि 12 स्टेट्स और 2 यूनियन टैरिटरीज में ड्राउट की पोजीशन थी । लेकिन आज की पोजीशन में हम नहीं कह सकते हैं कि ड्राउट होगा क्योंकि अभी अगस्त और सितम्बर में जो वर्षा होगी उसका असर पड़ता है ।

श्री एस० बी० रमेश बाबू : मान्यवर, पिछले तीन साल से आन्ध्र प्रदेश में वर्षा नहीं होने के कारण काफी सूखा पड़ा है जिसमें तेलंगाना, रायलसीमा और अन्य इलाके आते हैं । क्या वहा पर हमारी केन्द्रीय सरकार की ओर से कोई सेंट्रल टीम गई है तो कब गई है और उसने क्या रिपोर्ट दी है और सेंट्रल गवर्नमेंट की ओर से कितनी धनराशि वहां पर दी गई है ?

SHRI YOGENDRA MAKWANA : This question does not arise out of the present question because this question relates to the monsoon and now he is asking about the relief being given to the State Government because of the drought. I would like to have a separate notice for this.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मानसून के कहीं पहले आने से और कहीं पीछे आने से स्थिति बदलती रहती है और यह साइक्लिक नियमसे चलता रहता है । जैसा हमारे मित्र अभी पूछ रहे थे कि वहां पर सूखा पड़ा हुआ है और बिहार में मानसून के पहले आ जाने के कारण 10 जिले पानी से भरे हुए हैं और लाखों एकड़ भूमि में फसल पानी में डूब गई है । जब इस प्रकार की बात है, दोनों स्थितियां हों,

सूखा और बाढ़ हो तो कृषि मंत्रालय इन दोनों हालतों में लोगों की सुख-सुविधा के लिए क्या करना चाहता है? बिहार के लिए और सूखे के लिए वे क्या कर रहे हैं, इसकी थोड़ी जानकारी मैं चाहता हूं।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, this question also has been extensively replied by me . .

श्री राम अवधेश सिंह : हिन्दी में जवाब दीजिये ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : मेरी हिन्दी अच्छी नहीं है, इसलिए कुछ गड़बड़ हो जाती है। मैं यह कहना चाहता हूं कि अकाल और बाढ़ और मानसून के बारे में गवर्नमेन्ट क्या करती है, वह मैंने बता दिया है। लौंग टर्म और शार्ट टर्म मेजर्स गवर्नमेन्ट क्या लेती है, बाढ़ के बारे में और अकाल के बारे में, यह बात इस मूल प्रश्न से उठती नहीं है। इसलिए इस बारे में कहना मुश्किल है।

श्री सत्यपाल मलिक : मैं यह कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में कैनाल सिस्टम जो अंग्रेजों का दिया हुआ है वह सिर्फ दो फसलों के लिए काफी है। इंटेंसिव इरीगेशन के लिए ज्यादातर किसानों को अपने ट्यूबवेल लगाने पड़ते हैं, लेकिन वे बिजली की कमी की वजह से चल नहीं पाते हैं। खास करके धान की फसल में लगातार पानी देने पर भी बिना वर्षा के काम नहीं चलता है। विशेष कर मेरी जानकारी के मुताबिक हरियाणा में करीब-करीब तीन जिले ऐसे हैं जहां पर लगातार पानी देने पर भी धान की फसल किसानों को काटनी पड़ती है क्योंकि भूमि में जो नमक होता है वह सतह पर आ जाता है और धान की फसल चौपट हो जाती है। मैं यह जानना चाहता हूं कि मानसून की देरी के कारण जो नुकसान होने की संभावना रहती है यह लगभग हर साल रहती है और हम यहां पर अपना रोना रोते रहते है, तो क्या आपने इसके लिये कोई सिस्टम सोचा है? इससे निपटने के लिये इंटेंसिव इरीगेशन का क्या इंतजाम किया है और इस दौरान कितना नुकसान किस-किस फसल का हुआ है, ज्वार का कितना हुआ है, मक्का का कितना हुआ है और धान का कितना हुआ है?

श्री योगेन्द्र मकवाणा : मैंने पहले ही बताया है कि अभी अगस्त-सितम्बर में जो बारिश आयेगी उसके आधार पर ही कुछ कहा जा सकेगा। अभी हम कोई असैसमेन्ट नहीं दे सकते हैं।

श्री सत्यपाल मलिक : मैं माफी चाहूंगा। मेरी जानकारी के अनुसार सोनीपत और रोहतक में दो तिहाई धान उजाड़ दिया है क्योंकि उसे बारिश चाहिए थी। वहां का पानी नमक वाला पानी है इस कारण धान की फसल चौपट हो गई है। मैं जानना चाहता हूं कि इसका असैसमन्ट है या नहीं?

MR. CHAIRMAN: All right. The question is put. Can you compel the monsoon to come in time?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Therefore, Sir, I say that at present there is no assessment available.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: May I know from the hon. Minister whether the Government has identified the areas where the monsoon has not come in time because most of the kharif sowing is to be completed by the end of July? There are some areas in the country where the monsoon did not come upto the end of July, that is why the sowings did not take place. For example, it has been announced on Doordarshan that Telengana region of Andhra Pradesh and Marathwada region of Maharashtra did not get the proper monsoon and the sowings have not been completed there. Will it not affect the production from kharif crops?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The schedule is prepared by the Meteorology Department about the rainfall in the entire country. There

are 35 sub-divisions which are identified and what the rainfall will be is also given by the Meteorology Department. I have available with me the dates on which the monsoon will set in a particular area and so far, I have seen from the reports, the monsoon has broken in many areas. But it cannot be said at present that it will affect the crop production because it all depends on the rainfall in the months of August and September. Also in certain areas the kharif sowing is still going on; it is not completed all over the country.

श्रीमती सूर्यकांता जयवंतराव पाटील : श्रीमन्, मैं सवाल के उत्तर के आखिरी हिस्से की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। मंत्री महोदय ने बताया है कि कुछ एक राज्यों में खरीफ की बुवाई चल रही है। एक किसान होने के नाते मैं यह पूछना चाहती हूं कि डेढ़ महीने के बाद की जाने वाली बुवाई क्या फसल देगी? वह फसल उपजेगी नहीं। श्रीमन् जब बुवाई ही नहीं हो रही है, हमारे मराठवाड़ा रीजन की बात अभी जाधव जी ने कही है। हमारे यहां आधे से अधिक जमीन खाली पड़ी है, बंजर भूमि की तरह हम उसको खाली देखते हैं। मानसून का बिगड़ा हुआ मिजाज हम समझ सकते हैं। वे वह तो बिगड़ा हुआ सनम है। हम समझ हैं कि कुछ तो मजबूरियां रहीं होंगी यूं ही कोई बेवफा नहीं होता। मानसून की बेवफाई को हम समझ सकते हैं लेकिन हम मंत्री महोदय की बेवफाई को समझ नहीं पा रहे हैं। आप कहते है कि बुवाई चल रही है जब कि वहां बुवाई नहीं हो रही है और अगर बुवाई होगी भी तो फसल उपजेगी नहीं। इसलिए मैं जानना चाहती हूं कि ऐसी स्थिति में केन्द्रीय सरकार क्या करना चाहती है?

MR. CHAIRMAN: Now we will ask Mr. Makwana to come and command waves like King Canute.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: When I say that in certain areas the sowing is going on, still it is not complete... (*Interruptions*) I am entitled to speak in the language I like. Sir, he cannot force me to speak in Hindi. Now I will not speak in Hindi.

MR. CHAIRMAN: Hon'ble Members are aware that the Minister may speak in the language of his choice—Hindi or English. You cannot compel the Minister. Mr. Makwana, now you can speak in any language you like.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, I said that in certain areas kharif sowing is completed, in certain areas it is going on. The hon. lady Member talks about the areas where there is no rainfall at present. But it is very difficult for me to say anything about the effect on the crop production at this stage. I have talked about the entire country. It is not for a particular area. The overall situation can be assessed after the months of August and September because then it will give us the correct idea about the total production of foodgrains in the country.

Full in production of ginger in Himachal Pradesh

*325. SHRI CHANDAN SHARMA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether there is a sharp decline in ginger production in Himachal Pradesh especially in Sirmour district during the last three years;

(b) if so, what are the reasons for the fall in ginger production and also fall in dry-ginger prices; and

(c) what steps Government have taken to ameliorate the deteriorating economic plight of the farmers whose economy solely depends on ginger and dry-ginger sale, and with what results?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION (SHRI YOGENDRA MAKWANA): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) and (b) During the last three years, production of ginger in Himachal Pradesh and Sirmour district has been as under:—

(*Production in Tonnes*)

	1982-83	1983-84	1984-85
Total in H.P.	477	870	983
Sirmour District	247	464	422